संगीत त्रिवेणी

(गायन-वादन-नर्तन)

उत्तर भारतीय संगीत (गायन, वादन, नृत्य) के विविध आयाम

डॉ. आनंद तिवारी
प्राचार्य/संरक्षक

डॉ. हरिओम सोनी
सम्पादक

डॉ. अपर्णा चाचोंदिया
सम्पादक

आयोजक-संगीत एवं नृत्य विभाग

शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय सागर (म.प्र.)

प्रकाशक : रागी पब्लिकेशन एण्ड इंटरप्राइजेज
चैतन्य हास्पिटल के पास में, सैनी के कुआँ के सामने,
वृन्दावन वार्ड, तिली रोड, सागर (म.प्र.)
ई मेल : ragipublicationandenterprises@gmail.com
सम्पर्क : 9039515004

प्रकाशन वर्ष : 2023

संस्करण : प्रथम

मूल्य : 300/-

सम्पादक मंडल :
डॉ. हरिओम सोनी
डॉ अपर्णा चाचोंदिया

Book Name-Sangeet Triveni
ISBN.No.-978-93-340-4240-5

अक्षर संयोजन एवं मुद्रण
रॉयल कम्प्यूटर्स,
वनवे परकोटा रोड, सागर (म.प्र.)
मो. : 9425452106

नोट–प्रस्तुत प्रोसिडिंग में शामिल किये गए समस्त शोध पत्रों की सामग्री एवं तथ्यों की सम्पूर्ण जबाबदारी लेखकों की होगी इस हेतु सम्पादक या समिति किसी प्रकार से जिम्मेदार नहीं होगी।

अनुक्रमणिका

क्र	विषय	पृष्ठ
1.	भारतीय राग चिकित्सा – समालोचनात्मक विश्लेषण **डॉ. अवधेश प्रताप सिंह तोमर**	01
2.	नृत्यकला एवं रासलीला **डॉ. अपर्णा चाचोंदिया**	07
3.	वर्तमान परिवेश में संगीत घरानों की प्रासंगिकता **डा. प्रेम कुमार चतुर्वेदी**	11
4.	विकसित अवनद्य वाद्य – तबला (एक दृष्टिपात) **डॉ. विभूति मलिक**	17
5.	नृत्य कला में नायिका भेद **प्रो. डॉ. नीता गहरवार**	22
6.	संगीत में घराने – गुण एवं दोष **प्रो. डॉ. अलकनंदा पलनीटकर**	26
7.	गुप्त कालीन संगीत, गायन एवं वादन **प्रॉफसर नवीन गिडियन**	30
8.	बंदिश एवं नवसृजन **पंडित देवेन्द्र वर्मा**	34
9.	हिन्दी के गीतों में संगीत **डॉ. नरेन्द्र सिंह ठाकुर,**	43
10.	देश के सामाजिक आर्थिक विकास में संगीत कलाकारों की भूमिका **प्रोफेसर नित्यानंद चौधरी**	46
11.	प्राचीन ताल पद्धति का विश्लेषणात्मक विवेचन **डॉ. गुलशन सक्सेना**	51
12.	ताल के दस प्राण **हरविंदर बीर कौर**	55
13.	संगीत, संस्कृति और समाज **डॉ. मालती दुबे**	59
14.	संगीत कला का व्यवसायीकरण **डॉ. प्रियंका शेण्डे**	61
15.	कत्थक नृत्य में नायिकाओं की अष्टावस्था **प्रो. वन्दना चौबे**	65

16. कला का व्यवसायीकरण और सोशल मीडिया की भूमिका — 72
एक विश्लेषणात्मक अध्ययन
डॉ. रश्मि शर्मा

17. संगीत संस्कृति और समाज — 78
डॉ. डी.के. गुप्ता

18. **मानव जीवन में संगीत और स्वास्थ्य** — 80
श्रीमती रागिनी श्रीवास्तव

19. भारतीय संगीत के विविध आयामों में महिलाओं की स्थिति और भूमिका — 84
प्रीति वर्मा

20. विभिन्न संगीत शैलियों के साथ विभिन्न तालों का सामांजस्य — 88
शैलेन्द्र सिंह राजपूत

21. संगीत में अवनद्ध वाद्यों का विकास एवं महत्व संदर्भ–तबला — 92
शैलेन्द्र वर्मा/डॉ. रवि कुमार पण्डोले

22. भारतीय संगीत गायन के विविध आयाम — 96
डॉ. जितेन्द्र कुमार शुक्ला

23. हिन्दी साहित्य में चौमासा (आषाढ़, सावन, भाद्रपद, अश्विन) — 100
लोक, ललित का मूल आधार
राघवेन्द्र प्रताप सिंह/डॉ. सुजीत देवघरिया

24. युवा पीढ़ी का पाश्चात्य संगीत की ओर रूझान — 106
कृष्ण कुमार कटारे

25. महिलाओं से संबंधित मनोविकारों के निवारण में — 108
संगीत चिकित्सा की प्रासंगिकता
वर्षा मीणा/डॉ. संतोष मीणा

26. भारतीय रंगमंच का स्वरूप एवं सांस्कृतिक परंपरा — 114
अंजलि वर्मा

27. तबले की उपशास्त्रीय वादन शैली — 117
डॉ राहुल स्वर्णकार

28. बुन्देली लोकगीतों में सांस्कृतिक चेतना — 123
डॉ. सरिता जैन

29. मनोचिकित्सा में संगीत का प्रयोग — 125
डॉ. हरीश वर्मा

30. अभ्यास एवं साधना (आध्यात्मिक अध्ययन) — 128
आकाश जैन

31. सितार वादन करने हेतु तकनीक का महत्व–एक अध्ययन — 132
डॉ. अमनदीप कौर

32. शास्त्रीय संगीत, नृत्य में रोजगार के अवसर 138
गरिमा भार्गव

33. कथक नृत्य की धार्मिक एवं आध्यात्मिक पृष्ठभूमि 140
डॉ. योगिता मंडलिक

34. धार्मिक पृष्ठभूमि पर अवस्थित नृत्यकला 142
कल्पना कुमारी

35. उत्तर भारतीय संगीत (गायन, वादन, नृत्य) 146
के विविध आयाम संगीत, संस्कृति और समाज
अनुराग गुरु

36. मध्यभारत के प्रमुख जनजातीय नृत्यों में अवनध वाद्यों की भूमिका 149
सरगम खान

37. संगीत संस्कृति और समाज 154
अमोल शेषराव गवई

38. संगीत और साहित्य का अंर्न्तसंबंध 156
सत्येंद्र सिंह पटेल

39. धार्मिक पृष्ठभूमि पर अवस्थित नृत्यकला कथक नृत्य एवं ईश्वर उपासना 159
सुश्री योगिता सरोया

40. विभिन्न ग्रंथों में वर्णित अवनद्य वाद्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन 161
तेजस्स पटैल

41. कथक नृत्य प्रस्तुति में आहार्य अभिनय 166
डॉ. संगीता ठाकुर

42. भारतीय शास्त्रीय नृत्यों में प्रयोगधर्मिता कथक नृत्य के संदर्भ में 169
डॉ. अमित साखरे

43. संगीत, संस्कृति एवं समाज 172
डॉ. रविन्द्र कुमार ध्रुवे

44. संगीत का स्वास्थ्य में योगदान 174
पायल कुमारी

45. कथक नृत्य प्रदर्शन में तुलसीकृत रचनाओं की उपादेयता 177
सुश्री रेखा मालवीय

46. ताल के दस प्राण 180
डॉ. कृष्णा बाला सिंह

47. धार्मिक पृष्टभूमि पर अवस्थित कथक नृत्य 185
डॉ नरेन्द्र कुमार ध्रुव

48.	गुप्त कालीन नृत्य एवं अभिनय **डॉ. अंजलि दुबे**	188
49.	मार्ग और देशी संगीत कलाऐं **विशाखा तिवारी मिश्रा**	191
50.	तबला स्वतंत्र वादन में गत वादन का स्वरुप एवं महत्व (एक विश्लेषणात्मक अध्ययन) **गगन राज/आकाश जैन**	196
51.	संगीत के अध्ययन–अध्यापन में ई–संसाधनों की भूमिका **मितेन्द्र सिंह सेंगर**	200
52.	New teaching policy 2020 and today's student with music subject **Dr. HARIOM SONI**	206
53	CHEMISTRY BEHIND THE MUSIC **Dr. A.H. Ansari**	208
54.	The Dynamism of Indian painting under the patronage of the Mughals **Dr. Ashish Kumar Chachondia**	211
55.	Interrelation between music and chemistry: An Overview **Dr. Santosh Narayan Chadar**	215
56.	Music and Mental Health **Mayuresh Namdeo/ Dr. Santosh Kumar Gupta**	219
57.	Creativity in Choreography by Kumudini Lakhia, an Initial Journey **Jayti Brahmbhatt / Prof. Vandana Chaubey**	225
58.	DANCE BASED ON RELIGIOUS BACKGROUND **Kavisha Sabharwal**	228
59.	Personality Development and Employment Prospects Through Classical Dance **Mrs. Manjusha Rajas Johari / Prof. Vandana Chaubey**	232
60.	Use of music in EFL [English as a foreign language] **Mrs. Vibha Soni**	235
61.	Contribution of Women in Dance **Arshdeep Kaur Bhatti**	237
62.	Utility of Music in Indian Society **Priyam Chaturvedi**	241
63.	Music as an incredible medicine: A cure for wide range of diseases and disorders **Vaishali Prajapati**	245
64.	Psychology and Music Therapy **Koustubh Pare**	251
65.	The Importance of Music Education in India **Vishal V. Korde**	254
66.	Ten Elements of Taal (Taal Ke Das Pran) **Sompura Krupal Chetanbhai**	259

बुन्देली लोकगीतों में सांस्कृतिक चेतना

डॉ. सरिता जैन

प्राध्यापक हिन्दी

शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय

"किसी भी भाषा के विकास का मूल उस क्षेत्र की लोक संस्कृति, कला, जीवन के रहन–सहन में निहित रहता है। लोक संस्कृति से कटकर किसी भी भाषा के विकास की कल्पना तक नहीं की जा सकती। बुंदेलखंड में व्यक्ति ने अपने मनोभावों, अपनी लोक संस्कृति को लोकगीतों के माध्यम से जन–जीवन की समस्याओं, मान्यताओं, रीति रिवाजों, रहन–सहन की विविध प्रणालियों के हमारे समक्ष रखे हैं। इसमें काव्य तत्व या अभी जात्य काव्यगुण कितना है यह हम सोचते रह जाएंगे और गीत लोकप्रिय होकर लोगों के दिल में बैठ जायेगें। किसी देश या राष्ट्र का प्राण उसकी सांस्कृति होती है राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त ने हिंदू काव्य में अपनी संस्कृति के विषय में लिखा है–

"अपनी संस्कृति का अभिमान करो सदा हिंदू संतान।
सब आदर्शों की वह खान, नर रत्नव करेगी दान।।
अपनी चिर संस्ति की मूर्ति है मनुष्यता की परीपूर्ति।
प्राणारूप उसका पुरूषार्थ, साधन करता है परमार्थ।।
युग–युग के संचित संस्कार, ऋषि–मुनियों के उच्च विचार।
धीरों–वीरो के व्यवहार, हैं निज संस्कृति के श्रृंगार।।

लोक से आशय समग्र जन समाज व जन्म मानव से है। जो भी हमें दिखाई देता है, जहां तक हमारी कल्पना पहुंचती है, वह सब लोग की परिधि में आता है और लोग के जीवन व्यवहार, चिंतन, कार्यकलाप, रहन–सहन, रीति–रिवाज, तीज–त्यौहार, व्रत पूजन, शिल्प कला, स्थापत्य तथा ललित–कला आदि के समन्वित रूप का नाम संस्कृति है। अतः बुंदेलखंड क्षेत्र के जन मानस की सोच, कार्य व्यवहार आदि का बोध कराने वाला शब्द है बुंदेली संस्कृति। डॉ. उमाकांत कपि ध्वजा ने लिखा है–"मध्य प्रदेश की लोक भाषाओं में बुंदेलखंडी का अपना पृथक व महत्वपूर्ण स्थान है। भाव–भाषा, उपमा एवं अलंकार सभी दृष्टियों से इसका इतिहास अत्यंत ही समृद्ध रहा है। इस समस्त भू–भाग की संस्कृति सर्वत्र एक समान है।1

बुंदेली बोली का सरलीकरण और कोमलीकरण की प्रवृत्ति के कारण ही यहां के लोकगीतों में मधुरता, रसमयता और कोमलता प्राप्त होती है। भाषा को मधुर बनाने में यहां के ग्रामीण समाज का विशेष योगदान रहा है। लोकगीत तो यहां की ऐसी संपत्ति है, जिसमें भाषा का अक्षय भंडार भरा पड़ा है। इस क्षेत्र के लोकगीतों में यहां की स्थानीयता, सामाजिक, स्थितियॉ, रीति–रिवाज, बोलते प्रतीत होते हैं। स्वाभाविकता तो इन गीतों के प्राण तत्व है। साथ ही स्थानीयता का रंग अपनी गहराई के साथ उभरता प्रतीत होता है। यहां जन्म से लेकर मृत्यु तक तथा सवेरे से लेकर शाम तक विविध प्रकार के लोकगीत यहां के नर–नारी गाते हैं। इनके जीवन के विविध रूपों की झांकी प्र.तिक पर्यावरण के साथ चित्रित्र होती हैं–

सोहर गीत– "कौन के अंगना बसूरिया, लहर–लहर करै जू,
कौन की नार गरभ में ललन–ललन करै जू,
दशरथ कि अंगना बसुरिया लहर–लहर करै जू,

राम की नार गरभ में ललन–ललन करै जू।।"2

नारी के जीवन की सार्थकता उसके मातृत्व में मानी जाती है। इस नृत्य में जो नर्तक जो भी गीत गाते हैं उनमें बुन्देलखण्ड की संस्कृति ध्वनित होती है–

"साउन सुहानी मुरली बजै
भादौं सुहानी मोर।
तिस्या सुहानी जबई लगै
बारौ खेले पौर के दौर।।3

नृत्य की जब थाप चलती है जो नाद्य तंत्र की नियमबद्धता, साज–सज्जा, रंग प्रसाधन की औपचारिकता से निलिप्त तथा बाह्याडम्बरों की जकड़न से मुक्त है। बाद्यो की ठकाठक डण्डों की आवाज ढोलक की थायें और मंजीरों की टनटनाहट, ये लोगों में जीवन्तता उँडेलने मे अन्य कोई भी उपादान इसकी समता नहीं कर सकता, से लोकनृत्य लोक कला, लोक गीता बुन्देली संस्कृति का एक ऐसा मंजुल रूप है जिसका आनंद शब्द सामर्थ से बाहर है ।

"चौरई, नौनिया तोरे दिन कड़ गए,
कनकउआ लहरियों लेह।
ठॉडौ घूमा विनती करै।
कोउ टोर फूँदरया लेय।"4

बुन्देली, बुन्देलखण्ड के एक विस्तृत भू–भाग की लोकभाषा है । –

"अखियों जब काऊ से लगतीं सब–सब रातन जगती।
झपती नई नींद ना आबै, का उसनींदे भगतीं।
बिन देखे से दरद दिवानी, पके खता–सी दगती।
ऐसौ हाल होत है, ईसुर पलॅक न पलतर दबतीं। "5

इस प्रकार लोक गीतों में जन–जीवन के अनेक रूप, नीम, बबूल आनों वाली क्षेत्र के प्राकृतिक परिवेश सहित प्रतिबिम्बित है। साहित्यिक एवं काव्य तत्व की दृष्टि से इन गीतों का अत्यंन्त महत्व है जितना ही हम इनकी तह में जाते है उतना ही इनका मूल्य स्पष्ट होता जाता है। लडकी की बिदाई के समय बड़ा ही करूण दृश्य उपस्थित हो जाता है उस समय स्त्रियॉ गाती है–

"हाथ पकड़ बेटी हुलियॉ बिठारी
पोरों लो जावे इनकी काकी मेरे लाल
अॅगना री उनकी गाय जू जावें
गलियां री संगों भाई मेरी लाल
विच वन खण्ड बेटी देखन लागी
मायके को कोड न दिखाय मेरे लाल।"6

इस तरह बुन्देलखण्डी बुन्देलीगीतों में अभिव्यक्त पारिवारिक जीवन यद्यपि आदर्श की नींव पर निर्मित हुआ है लेकिन उसमें यथार्थ जीवन के थपेड़ों को सहने की शक्ति भी विद्यमान मिलती है। इसी कारण सदियों से उसका अस्तित्व कायम है तथा बुन्देली लोक संस्कृति के संवहन में उसकी महती भूमिका है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ उमाशंकर शुक्ल – बन्देलखण्ड के लोकगीत पृ. 36
2. डॉ. बलभद्र तिवारी – बुन्देलखण्ड काव्य परम्परा प्रथम खण्ड – पृ. 9
3. परशुराम शुक्ल – बुन्देलखण्ड की संस्कृति पृ. 81
4. मध्य–प्रदेश की जनजातीय सांस्कृतिक परम्परा साक्ष्य, पृ. 465
5. लोककवि ईसुरी : फारों का एक छन्द
6. डा. राम नारायण शर्मा – बुन्देली के रचनाकार ग्रन्थ पृ. 32